01-10-2020

संस्कृतसामान्यम् ।
अनिवार्यं प्रथमपत्रम् ।

उपशास्त्री II

शब्दरूपाणि ।

विद्वस् (विद्वान्, हलन्त, पुल्लिंग)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	,,	विद्वत्सु
सम्बोधनम्	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !	हे विद्वांसः !

01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।

01-10-2020

संस्कृतसामान्यम् । उपशास्त्री I

अनिवार्यप्रथमपत्रम् ।

शब्दरूपाणि

लता शब्द (आकारान्त, स्त्रीलिङ्गम्)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा -	लता	लते	लताः
द्वितीया -	लताम्	,,	,,
तृतीया -	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी -	लतायै	,,	लताभ्यः
पञ्चमी -	लतायाः	,,	,,
षष्ठी -	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी -	लतायाम्	,,	लतासु
सम्बोधनम् -	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

अन्य सभी आकारान्त, स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप (जैसे - गंगा, गीता, सीता, उमा, यमुना, आज्ञा, भाषा, कविता, सभा, बालिका, रमा, कृपा, पूजा, वसुधा, सुधा आदि) लता के समान होंगे।

अम्बा शब्द का सम्बोधन, एकवचन में हे अम्ब ! रूप बनेगा।

01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, प्रतियाँ।

01-10-2020

शास्त्री

साहित्यम् ।

छन्दविचार: ।

उद्गता छन्द →

"सजमादिमे सलघुकौ च ।"

प्रथमचरण में सगण, जगण, सगण तथा एक लघु क्रम से हों। प्रथमचरण में कुल दस अक्षर (वर्ण) होते हैं।

"नसजगुरुकैरथोद्गता ॥"

दूसरे चरण में क्रमश: नगण, सगण, जगण तथा एक गुरु हो। इस चरण में भी कुल दस अक्षर होते हैं।

"त्र्यङ्घ्रिगतभनजला ग युता: ॥।"

तीसरे चरण में क्रमश: भगण, नगण, जगण, एक लघु तथा एक गुरु यानि कुल ग्यारह वर्ण होते हैं।

"सजसा जगौ चरणमेकत: पठेत् ।V"

चौथे चरण में क्रमश: सगण, जगण, सगण, जगण तथा एक गुरु यानि कुल तेरह वर्ण (अक्षर) होते हैं। यह उद्गता छन्द का लक्षण है।

इस छन्द में प्रथम दो चरणों को मिलाकर पढा जाता है यानि द्वितीयचरण के अंत में यति तथा चौथे चरण के अन्त में तीसरे चरण के भी अन्त में यति होती है।

उदाहरण → "मृगलोचना शशिमुखी च,
रुचिरदशना नितम्बिनी ।
हंसललितगमना ललना,
परिणीयते यदि भवत्कुलोद्गता ॥"

भारवि / किरातार्जुनीयम् - 12 सर्ग 1 श्लोक।

[signature] 01-10-2020

डॉ० निर्मल कुमार झा (स० प्राचार्य)।
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।